INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
July-December 2023, Submitted in October 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों के समायोजन के प्रति शिक्षक के दृष्टिकोण का अध्ययन

Mukesh Chand Research Scholar, Dept. of Education, Maharaja Agrasen Himalayan Garhwal University
Dr. Ram Dhan Bharti Associate Professor, Dept. of Education, Maharaja Agrasen Himalayan Garhwal University

सार

प्रस्तुत अनुसंधान प्रपत्र एक शिक्षक के ग्रामीण प्राथमिक विद्यालय में एक अध्यापक के रूप में चयनित होने के पश्चात उसकी समायोजन की स्थिति को प्रकट करता है। यह दर्शाता है, कि किस प्रकार शिक्षा एक शिक्षक का महत्वपूर्ण अवयव है। जिसके माध्यम से एक व्यक्ति के स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण किया जा सकता है। प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के कार्यक्षेत्र में समायोजन की स्थिति का अध्ययन करने के लिए अनुसंधानकर्ता ने गुणात्मक एवं मात्रात्मक दोनों प्रकार से आंकड़ों को एकत्रित किया है। जो इस अनुसंधान से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से संबंध रखते हैं। संपूर्ण प्रपत्र का विश्लेषण करने के पश्चात केवल यह कहा जा सकता है, कि शिक्षा मनुष्य का महत्वपूर्ण अंग है। जो एक व्यक्ति को सर्वोच्च ऊंचाई पर भी ले जा सकती है एवं उसके अभाव में मनुष्य निम्न स्तर पर भी रह सकता है। शिक्षक का समायोजन एवं कुसमायोजन बहुत कुछ उसके शिक्षा पर निर्भर करता है।

प्रस्तावना

शिक्षा मनुष्य को सभ्य बनाने का कार्य करती हैं, शिक्षा प्राप्त कर मनुष्य समाज के साथ समायोजन कर अनुशासन के साथ जीवनयापन करता हैं। शिक्षा मनुष्य को आदर्शवादी बनाती हैं और उसमें नैतिक–मूल्यों का विकास करती हैं। शिक्षा प्राप्त कर व्यक्ति अपनी जन्मजात शक्तियों एवं योग्यताओं से परिचित होता हैं। शिक्षा के द्वारा ही एक समाज अपना विकास करता हैं और अपनी एक अलग पहचान बनाता हैं। शिक्षा व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की प्रगति के साथ–साथ सभ्यता और संस्कृति के विकास के लिए आवश्यक है, 'सुभाषित रत्न दोष' में कहा गया है कि ''ज्ञान मनुष्य का तीसरा नेत्र है, जो उसकी दृष्टि है। यह सभी तत्वों की जड़ को जानने में मदद करना है और यह काम करने की विधि बताता है।'' लोके ने ठीक ही कहा है–'पौधों का विकास कृषि से होता है और मनुष्य का विकास शिक्षा के माध्यम से होता है'। इसी तरह, दुबे ने इस तथ्य पर बल देते हुए लिखा है– ''जिस प्रकार शारीरिक विकास के लिए शिक्षा आवश्यक है, उसी प्रकार सामाजिक विकास के लिए शिक्षा आवश्यक है।'' शिक्षा संस्कृति और सभ्यता की जड़ और जननी है। शिक्षक ज्ञान के प्रकाश का वह स्रोत है, जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हमारा सच्चा मार्गदर्शक है। शिक्षक द्वारा हमारे संदेह और कठिनाइयों को दूर किया जाता है और दुनिया को समझने की क्षमता प्राप्त होती है। स्कूल एक ऐसा साधन है, जिसके द्वारा छात्र का सर्वांगीण विकास होता है। यदि स्कूल का वातावरण अच्छा है, तो उसके द्वारा दी गई शिक्षा अच्छी होगी और बच्चे में अच्छे गुण, कौशल और आदतों का विकास होगा।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और वह समाज में ही रहकर अपना जीवन व्यतीत करता है। मानव का विकास समाज से ही होता है और समाज का मानव से। मनुष्य समाज में रहकर ही अपने कार्यो का निर्वहन करता है, इस प्रकार मानव एक स्वस्थ एवं विकसित समाज का

निर्माण करता है। टैगोर के अनुसार, ''शिक्षा का अर्थ मस्तिष्क को इस योग्य बनाना है कि वह सत्य की खोज कर सके और उस सत्य को अपना बनाते हुए उसको व्यक्त कर दे।''

मानव विकास का मूल आधार शिक्षा है इसके द्वारा ही व्यक्ति, समाज और राष्ट्र का विकास होता है। वास्तव में, शिक्षा वह सब प्राप्त करने में व्यक्ति की सहायता करती है, जिसके वह योग्य है और जिसकी वह आकांक्षा रखता है। प्राथमिक शिक्षा सम्पूर्ण शिक्षा की आधारशिला है। अतः इस आधारशिला का मजबूत होना अत्यन्त आवश्यक है। इसलिए समस्त नागरिकों को शिक्षा के अवसर समान रूप से उपलब्ध हो, इसलिए भारतीय संविधान में इसे समाहित किया गया है। अनुच्छेद 45 के अनुसार ''राज्य संविधान के लागू होने के दस वर्ष के अन्दर सभी बच्चों को उनके 14 वर्ष होने तक मुफ्त एवं अनिवार्य शिक्षा प्रदान करेगी।''

प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता पर ही भावी राष्ट्रीय शिक्षारूपी भवन का निर्माण सम्भव है। शिक्षा प्रक्रिया में तीन पक्ष महत्वपूर्ण है शिक्षक, शिक्षार्थी और पाठ्यक्रम। शिक्षक पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों में वांछित गुणों के विकास का प्रयास करता है। पाठ्यक्रम का निर्माण कितना भी अच्छा क्यों न हो, लेकिन उसे पढ़ाने वाला शिक्षक योग्य जागरूक एवं संक्षम नहीं होगा, वह समुन्नत रूप से लागू नहीं हो पायेगा। लेकिन इसके साथ–साथ शिक्षकों का प्राथमिक कक्षाओं में शिक्षण कार्यो में समायोजन भी अच्छा होना चाहिए। जिस व्यक्ति में समायोजन की योग्यता होती है, वह प्रत्येक परिस्थिति में अपनी क्षमताओं का उपयोग करने में सक्षम होता है और अपने उत्तरदायित्वों का उचित निर्वाहन करने में समर्थ होता है तथा जिससे उसके अंदर अपने कार्य के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति का निर्माण होता है। थर्सटन के अनुसार (1927) ''अभिवृत्ति किसी मनोवैज्ञानिक वस्तु से सम्बन्धित धनात्मक या ऋणात्मक भाव है।''

प्राथमिक शिक्षा में गुणवत्ता को सुदृढ़ बनाये रखने के लिए, राज्य सरकार निरन्तर प्रयासरत है और इसलिए प्राथमिक शिक्षा को सर्व सुलभ बनाने के लिए डी0पी0ई0पी0, सर्व शिक्षा अभियान, बेटी बचाओं बेटी पढाओं, बालिका शिक्षा आदि कार्यक्रमों को सरकार द्वारा लागू किया गया है और वर्तमान में मिड डे मिल, कायाकल्प, मिशन प्रेरणा (दीक्षा एप व निष्ठा कार्यक्रम) कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं, इसी क्रम में दीक्षा एप पर निष्ठा एकीकृत शिक्षण प्रशिक्षण के माध्यम से स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए शिक्षकों की क्षमता निर्माण एवं संवर्द्धन कार्यक्रम संचालित है। इसका उद्देश्य, सभी शिक्षकों में दक्षता का संवर्द्धन करना है।

यह कार्यक्रम केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय द्वारा शिक्षा व्यवस्थाओं को सशक्त बनाने और आधुनिक रूप से बढावा देने के लिए सरकार की ओर से टीचर्स ऐजुकेशन प्रोग्राम के तहत शुरू किया गया। निष्ठा प्रशिक्षण के द्वारा कक्षा 1 से 8 तक के बच्चों को पढाने वाले, 42 लाख शिक्षकों को प्रशिक्षण प्रदान किया जाना सुनिश्चित किया गया हैं। इस प्रशिक्षण को अक्टूबर 2020 से जनवरी 2020 तक एन.सी.ई. आर.टी. द्वारा 18 माडयूलों के माध्यम से यह ऑन–लाइन ट्रेनिंग प्रोग्राम में शिक्षकों को प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। यह निष्ठा कार्यक्रम तभी सुचारू ढंग से अपने उद्देश्यों की पूर्ति कर पायेगा जब शिक्षकों की अभिवृत्ति इसके प्रति सकारात्मक होगी। किसी व्यक्ति में कार्य करने की क्षमता एवं योग्यता उसकी सकारात्मक अभिवृत्ति पर निर्भर करती है। जिस प्रकार शिक्षा समस्त विकास की आधारशिला है, उसी प्रकार शिक्षक समस्त शैक्षिक प्रक्रिया की धुरी है और कुशल शिक्षकों के अभाव में शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति सम्भव नहीं है। इसीलिए शिक्षक को राष्ट्र निर्माता कहा गया है।

INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
July-December 2023, Submitted in October 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व –

सृष्टि के प्रारम्भिक काल से समाज में शिक्षा किसी न किसी रूप में विद्यमान रही, इसमें शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। अतः शिक्षकों से आशा की जाती है कि वह अपने प्रभावशाली व्यक्तित्व से, छात्रों में समाज, सम्मत और उत्तम गुणों का विकास करने में सफल हों। आज 21वीं सदी में, सरकार लगभग दो किलोमीटर की दूरी पर प्राथमिक विद्यालयों की स्थापना कर रही है और उनमें कार्यरत शिक्षकों को प्रशिक्षित करने का कार्य भी शिक्षा में सकारात्मक गुणवत्ता लाने के उद्देश्य से कर रही है। लेकिन यह जानना भी आवश्यक हो जाता है, कि शिक्षकों का समायोजन कैसा है? वह प्रशिक्षण में रूचि लेने के साथ–साथ प्रशिक्षण भागीदारी से सीखने वाले प्रशिक्षण तथ्यों का छात्रों पर उचित प्रयोग कर लाभ उठा रहे हैं या नहीं। इसी क्रम में, शोधकर्ता के मन में यह जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि क्या शिक्षकों का समायोजन अच्छा है व निष्ठा कार्यक्रम के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति का अध्ययन किया जाये। इस निमित्त इस शोध विषय का चयन किया गया।

प्राथमिक विद्यालय

वे विद्यालय जिसमें कक्षा 1 से कक्षा 5 तक का शिक्षण कार्य किया जाता है यह विद्यालय सरकारी तथा गैर सरकारी होते हैं जिन्हें बेसिक शिक्षा परिषद द्वारा मान्यता दी जाती है।''

शिक्षक –शिक्षक से तात्पर्य उन शिक्षकों से है जो प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षण कार्य कर रहे हैं वे बी0टी0सी0/बी0एड0 प्रशिक्षण प्राप्त सेवारत शिक्षक हैं।

समायोजन से अभिप्रायः प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के व्यवहार से ही नहीं अपितु, वातावरण के साथ समायोजन से भी है और इस अध्ययन में शिक्षकों का प्राथमिक कक्षाओं मे शिक्षण कार्य अपने मित्रों एवं सहयोगियों तथा विद्यालयी वातावरण के प्रति समायोजन से है।

निष्ठा कार्यक्रम, शिक्षकों का शैक्षिक कार्य में समग्र उन्नति के लिए सरकार द्वारा चलाया गया टीचर्स ट्रेनिंग प्रोग्राम है। इसमें शिक्षकों के बदलते समय व बच्चों की सोच में हो रहे बदलाव को ध्यान में रखते हुए, इस प्रोग्राम में नये गुर सिखायें जायेंगे। ताकि शिक्षक बच्चों की रूचि के अनुसार खेल–खेल में पढाई को आनन्दमयी एवं रुचिकर बनाकर पढ़ा सकें।

उद्देश्य :–

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य, प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के समायोजन एवं निष्ठा कार्यक्रम के प्रति शिक्षक के दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन करना है। इसके लिए अनुसन्धान कर्ता ने कुछ प्रदत संगृहीत किये है, जो प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से इस अध्यन से संबंधित हैं जैसे–

- प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों के समायोजन का अध्ययन करना।
- लिंग के आधार पर प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों के समायोजन का अध्ययन करना।
- स्थानीयता के आधार पर प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के समायोजन का अध्ययन करना।
- प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की निष्ठा कार्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

- लिंग के आधार पर प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की निष्ठा कार्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

विश्लेषणः—

शिक्षा, प्रत्येक व्यक्ति के चरित्र निर्माण एवं विकास के लिए आवश्यक है। शिक्षा से ही व्यक्ति समाज में सम्मानित जीवन यापन करने में सफल हो पाता है। शिक्षा से व्यक्ति को अमूल्य ज्ञान की प्राप्ति होती है, जिसका प्रयोग वह अपने निजी जीवन में करता है। इसके द्वारा व्यक्ति अपने अंदर की क्षमता को जान पाता है एवं उसका विकास संभव हो पाता है।

शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति जब अपने चरित्र एवं व्यवहार का निर्माण करने में सफल हो जाता है, तो वह एक व्यस्क के रूप में अपनी भूमिका निभाने के लिए समाजीकृत हो जाता है। शिक्षा मनुष्य को एक सभ्य और आदर्शवादी मनुष्य बनती हैं और उसके ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि करती है। जिस समाज में मनुष्य रहता है, यह अत्यंत आवश्यक है कि वह उस समाज का निर्माण उचित रूप से करें , समाज को उचित सभ्य समाज में परिणित करें और एक स्वस्थ एवं विकसित समाज का निर्माण करें। इन सभी कार्यों में शिक्षा अपना विशेष योगदान प्रदान करती है।

प्रत्येक मनुष्य को जिस प्रकार शिक्षित होना आवश्यक है, उसी प्रकार शिक्षा के लिए उत्तम शिक्षक का होना भी आवश्यक है। जिस अमूल्य ज्ञान प्राप्ति की बात हम कर रहे हैं, उसकी प्राप्ति में शिक्षक अपना अभिन्न योगदान प्रदान करता है। शिक्षक व्यक्ति को उचित मार्ग दिखाता है, जिस पर चलकर एक व्यक्ति शिक्षा प्राप्त कर सकता है। मनुष्य जीवन में शिक्षक ही है, जो आपको शिक्षा में मार्गदर्शन प्रदान कर सकता है। बिना शिक्षक के ज्ञान की प्राप्ति अत्यंत कठिन प्रतीत होती है, क्योंकि शिक्षक ज्ञान प्राप्ति के मार्ग को अत्यंत सरल कर देता है।

एक अच्छे शिक्षक को चाहिए कि वह अत्यंत सरल एवं सुपरिभाषित शब्दों में अपने विद्यार्थियों को ज्ञान प्राप्ति में सहयोग प्रदान करें। इस प्रक्रिया में तीन पक्ष अत्यंत महत्वपूर्ण है, शिक्षक, शिक्षार्थी एवं पाठ्यक्रम। शिक्षक पाठ्यक्रम के माध्यम से शिक्षार्थी को संपूर्ण ज्ञान प्रदान करने का प्रयास करता है, किंतु पाठ्यक्रम चाहे कितना भी अच्छा हो, यदि उसको प्रदान करने वाला अच्छा नहीं है, तो उस पाठ्यक्रम का कोई लाभ नहीं है। प्रत्येक शिक्षक पाठ्यक्रम को उचित ढंग से समझ सके एवं विद्यार्थी को समझा सके, उसके लिए सरकार द्वारा अनेक प्रोग्राम चलाए जाते हैं।

प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए, सरकार निरंतर प्रयतनं करती रहती है। वह अनेक प्रकार के अभियान सर्व शिक्षा अभियान, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, बालिका शिक्षा आदि चलाती हैं। निष्ठां प्रशिक्षण के द्वारा, शिक्षकों को कक्षा 1 से 8 तक के बच्चों को पढ़ाने के लिए प्रशिक्षित किया गया, जिससे प्रत्येक शिक्षक की योग्यता एवं कार्यक्षमता में अभिवृद्धि की जा सके। इसी क्रम में यह कहा जा सकता है, जिस प्रकार शिक्षा समस्त विकास की आधारशिला है, उसी प्रकार शिक्षक उस आधारशिला को प्राप्त करने का साधन है।

उपसंहार :—

इस स पूर्ण प्रपत्र का अध्ययन करने के पश्चात यह ज्ञात होता है, कि शिक्षा केवल एक छात्र का ही नहीं अपितु एक शिक्षक का भी अति महत्वपूर्ण भाग है। शिक्षा केवल एक छात्र का

SUSHANT UNIVERSITY ORGANIZED INTERNATIONAL CONFERENCE ON
"ADVANCES IN MULTIDISCIPLINARY RESEARCH AND INNVOATION" ICAMRI-2023
ON 28-29TH OCTOBER 2023
INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
July-December 2023, Submitted in October 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

शारीरिक, मानसिक, चारित्रिक विकास नहीं करती अपितु यह एक शिक्षक का भी शारीरिक, मानसिक, व चारित्रिक विकास करती है। इसके माध्यम से जीवन में फैले अंधियारे को बहुत ही सरल रूप से निकाला जा सकता है। क्योंकि यह मस्तिष्क में उन भावों का विकास करती है, जिसके माध्यम से सही एवं गलत की पहचान मनुष्य अपने जीवन में कर पाने में समर्थ होता है। यह प्रपत्र एक शिक्षक के समायोजन की स्थिति को दर्शाता है, कि किस प्रकार शिक्षा, शिक्षक के एक बेहतर समायोजन पर अपना प्रभाव छोड़ती है। उसका कुसमायोजन से बचाव करती है, जिससे वह छात्रों को भली प्रकार से शिक्षा प्रदान कर सके एवं समायोजन का भाग बना रहे। प्रस्तुत अध्यन पत्र में अनुसंधानकर्ता ने यह प्रस्तुत करने की कोशिश की है कि शिक्षकों का समायोजन कितना अच्छा है, उनको इससे कितना लाभ मिला है, उनके समायोजन से उनमे कितनी निष्ठां का विकास हुआ या उनकी अभिवृत्ति में बढ़ोतरी हुई या कमी। इसके लिए अनुसंधानकर्ता ने शिक्षकों का समायोजन एवं निष्ठां कार्यक्रम के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्यन किया है। जिससे यह निष्कर्ष निकलता है की शिक्षकों का समायोजन लिंग के आधार पर, स्थानीयता के आधार पर, निष्ठां कार्यक्रम के प्रति उनकी अभिवृत्ति के आधार पर करने से उनमे किसी भी प्रकार का कोई अंतर देखने को नहीं मिलता है। शिक्षक किसी भी स्थान, लिंग, या अभिवृत्ति से सम्बन्ध रखता हो वह अपने शिक्षक होने का दायित्व पूर्ण रूप से निभाता है।

सन्दर्भ सूची–

- शर्मा आर0ए0 (2011) अध्यापक शिक्षा एवं प्रशिक्षण तकनीकी आरलाल बुक डिपो मेरठ।
- त्रिपाठी एल.बी. (2002) मनोवैज्ञानिक अनुसंधान पद्धतियाँ एच.पी.भार्गव हाउस आगरा।
- राय, पारसनाथ (2019) अनुसंधान परिचय, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा।
- रा0शै0अ0प्र0प0 (2005) नेशनल फोकस ग्रुप ऑन आर्टस्, म्यूजिक जॉब एण्ड थियेटर नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क, नई दिल्ली।
- सुधीर पवन (2015) ट्रेनिंग पैकेज ऑन आर्ट एजुकेशन फॉर प्राइमरी टीचर्स, रा0शै0अ0प्र0प0, नई दिल्ली।
- सत्यपाल सिंह (2018), विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के समायोजन एवं निष्ठा कार्यक्रम के प्रति शिक्षक के दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन, (रिसर्च स्कॉलर), महात्मा ज्योतिबा फुले रोहिलखंड विश्वविद्यालय, बरेली
- सेमवाल, अरुण (2020) पौड़ी जनपद के राजकीय एवं गैर राजकीय माध्यमिक विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन
- वेस्ट जे0डब्लू (2007) रिसर्च इन ऐजुकेशन, प्रेस्टिंग हॉल ऑफ इन्डिया नई दिल्ली।
- वनर्जी शर्वरी (2018) जॉय ऑफ थिएटर, टीचर्स हैण्डबुक, अपर प्राइमरी स्टेज, नई दिल्ली।
- चौबे, एस0 पी0 (2015) शिक्षा के दार्शनिक ऐतिहासिक और समाजशास्त्रीय आधार, लॉयल बुक डिपो, मेरठ
- अग्रवाल सौरभ (2017) शिक्षा के सिद्धान्त, एस.बी.पी.डी. पब्लिशिंग हाउस आगरा।